March 2025

Monthly Magazine
Year 11 Issue 3

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार
In Giving We Believe

सतयुग

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

वुधवार सतसंग

प्रत्येक वुधवार प्रात ११ वजे से ११.३० वजे तक

फेसवुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसवुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्घोष जहाँ
राम राम मधुर धुन वहाँ
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,
जीवन में लाता सबके जो बहार
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
हमारा एन.आर.एस.पी., प्यारा एन.आर.एस.पी.
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता
परोपकार का भाव जगाता
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता
सत को करता अंगीकार
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुस्कान के राज बताता,
तन, मन, धन से देना सिखलाता
हमको जीना सिखलाता
घर-घर प्रेम के दीप जलाता
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
एन.आर.एस.पी.,एन.आर.एस.पी.

।। 卐 ।।

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

।। नारायण नारायण ।।

जब टीम सतयुग ने इस बार का विषय 'हक़' बताया तो मुझे सहज ही पढ़ी हुई यह कहानी याद आ गई।

एक संत एक गाँव में प्रवचन दे रहे थे। उन्होंने कहा, 'बिना हक़ का भोजन भी ज़हर होता है।'

एक आदमी बोला, 'महाराज, अगर भूख से मर रहा हूँ, तो किसी की रोटी खा लेना गुनाह है क्या?'

संत मुस्कराए और बोले,'अगर तुमने मेहनत नहीं की, और किसी की मजबूरी या दया का फ़ायदा उठाकर खाया, तो हाँ, वह तुम्हारे शरीर में रोग बन जाएगा। लेकिन अगर तुमने मदद मांग कर, ईमानदारी से लिया, तो वह भी तुम्हारा हक़ है - इंसानियत के नाते।'

बस हमें भी यह ही याद रखना है हक़ केवल संपत्ति या पैसे का नहीं होता, सम्मान और इंसानियत का भी होता है। जो भी लो, ईमानदारी और सच्चाई से लो। बिना हक के किसी की सेफ्टी पिन लेना भी उचित नहीं है । हमारे धर्म में कहा गया है, 'परधन हरण पापम'। यानी दूसरे का धन (या हक) लेना पाप है ।

हक वो चीज या भाव है जब आपका होता है तो दिल को चैन और आत्मा को सुकून देता है लेकिन यदि दूसरे के हक का लिया तो बोझ बन जाता है । ब्रह्म मुहूर्त की साधना में हमने सुना कि बिना हक का कण भर लिया और आजीवन टन भर चुकाया तन से भी, मन से भी, धन से भी और संबंधों से भी। जब भी कोई दूसरे के हक का लेता है वह अंदर से असंतोष और अपराधबोध से भर जाता है भले ही बाहर से वह कितना भी सफल क्यों न दिखे। दूसरी तरफ़, जो व्यक्ति, ईमानदारी से सिर्फ़ अपने ही हक पर संतोष करता है वह भीतर से शांत और संतुष्ट होता है । सदैव अपने ही हक का लें । यदि कभी यह समझ न आ रहा हो कि अमुक वस्तु आपके हक की है या नहीं तो नारायण कॉइन की मदद लें और सदैव सदमार्ग पर चलते हुए अपने हक का ही लें और सप्त सितारा जीवन के हकदार बन जाएँ ।

शेष कुशल -

R. Modi

| | | | |

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

-: प्रधान कार्यालय :-

नारायण भवन

टोपीवाला कंपाउंड, स्टेशन रोड़, गोरेगांव (प.), मुंबई

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	9712945552
अकोला	शोभा अग्रवाल	9423102461
अकोला	रिया अग्रवाल	9075322783
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	9422855590
औरंगाबाद	माधुरी धानुका	7040666999
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	7045724921
बैंगलोर	शुभांगीं अग्रवाल	9327784837
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9341402211
बस्ती	पूनम गाड़िया	9839582411
धनबाद	विनीता दुधानी	9431160611
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	8947036241
भोपाल	रेनू गट्टानी	9826377979
चेन्नई	निर्मला चौधरी	9380111170
दिल्ली (नोएडा)	तरुण चण्डक	9560338327
दिल्ली (नोएडा)	मेघा गुप्ता	9968696600
दिल्ली (डब्ल्यू)	रेनु विज	9899277422
धुलिया	रेणु भटवाल	878571680
गोंदिया	पूजा अग्रवाल	9326811588
गोहटी	सरला लाहोटी	9435042637
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	9247819681
इंदौर	धनश्री शिरालकर	9324799502
जालना	रजनी अग्रवाल	8888882666
जलगांव	काला अग्रवाल	9325038277
जयपुर	प्रीति शर्मा	9461046537
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
झुनझुनू	पुष्पा देवी टिबेरेवाल	9694966254
इचलकरंजी	जय प्रकाश गोयनका	9422043578
कोल्हापुर	राधिका कुमटेकर	9518980632
कोलकत्ता	स्वेटा केडिया	9831543533
कानपुर	नीलम अग्रवाल	9956359597
लातूर	ज्योति भूतड़ा	9657656991
मालेगांव	रेखा गारोडिया	9595659042
मालेगांव	आरती चौधरी	9673519641
मोरबी	कल्पना चोरौड़िया	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	9373101818
नांदेड़	चंदा काबरा	9422415436
नवलगढ़	ममता सिंग्रोडिया	9460844144
नासिक	सुनीता अग्रवाल	9892344435
पुणे	आभा चौधरी	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	9434012619
परतवाड़ा	राखी मनीष अग्रवाल	9763263911
रायपुर	अदिति अग्रवाल	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	9431115477
सूरत	रंजना अग्रवाल	9328199171
सांगली	हेमा मंत्री	9403571677
सिकर (राजस्थान)	सुषमा अग्रवाल	9320066700
श्री गंगानगर	मधु त्रिवेदी	9468881560
सतारा	नीलम कदम	9923557133
शोलापुर	सुवर्णा बलदवा	9561414443
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुधरा	9564025556
टाटा नगर	उमा अग्रवाल	9642556770
राउरकेला	उमा अग्रवाल	9776890000
उदयपुर	गुणवंती गोयल	9223563020
उबली	पल्लवी मलानी	9901382572
वाराणसी	अनीता भालोटिया	9918388543
विजयवाड़ा	किरण झँवर	9703933740
वर्धा	रूपा सिंघानिया	9833538222
विशाखापतनम	मंजू गुप्ता	9848936660
गुडगाँव	मेघा गुप्ता	9968696600
यवतमाल	वंदना सूचक	932521889

<u>अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का नाम</u>

ऑस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
दुबई	विमला पोद्दार	+971528371106
काठमांडू	रिचा केडिया	+977985-1132261
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
शारजाह	शिल्पा मंजरे	+971501752655
बैंकॉक	गायत्री अग्रवाल	66952479920
विराटनगर	मंजू अग्रवाल	+977980-2792005
विराटनगर	वंदना गोयल	+977984-2377821

।। 卐 ।।

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

।। नारायण नारायण ।।

पिछले दिनों, एक सहेली ने फ़ोन करके मुझे अपने घर बुलाया। उसे किसी खास विषय पर मेरी राय की आवश्यकता थी। समय तय करके मैं उसके घर पहुँची। वो मुझे कुछ उलझन में दिखी। मुझे देखते ही मेरे गले लग गई। मैंने हाथ पकड़कर उसे सोफे पर बैठाया और पूछा, 'बोल इतनी उलझी उलझी क्यों है? मेरी राय की आवश्यकता क्यों है? वह बोली, 'तू नारायण रेकी सत्संग से जुड़ी है। मुझे पता है राज दीदी अपने सत्संग में जीवन सुधार के बहुत महत्वपूर्ण तरीके बताती हैं। मेरे घर में बंटवारे की बात चल रही है। तुझे तो पता ही है कि मैं हमेशा से अपने परिवार के साथ यहाँ मुंबई में रहती हूँ। कभी न तो माँ बाऊजी ने हम से कुछ लिया न हमने उन्हें कभी कुछ दिया। तो क्या अब उनकी प्रॉपर्टी में हमारा कुछ हक बनता है? तू बता राज दीदी क्या कहती हैं?'

मैंने उससे वो ही कहा जो दीदी कहती हैं। अपने कर्तव्यों को सर्वोत्तम तरीके से पूरा करें। कभी बंटवारे की बात न करें और यदि बंटवारा हो रहा है तो जो मिल रहा है उसे आशीर्वाद समझ कर लें। मेरा हक़ है कहकर महाभारत न करें।

मेरी बात सुनकर उसने मुझे गले लगा लिया क्योंकि उसकी उलझन दूर हो चुकी थी।

बस टीम सतयुग ने संकल्प लिया कि इस अंक में हक के बाबत अपने पाठकों, से बात की जाये और आ गया यह अंक आपके हाथ में।

आप सदैव सिर्फ़ अपने ही हक का लें इन शुभकामनाओं के साथ

आपकी अपनी
संध्या गुप्ता

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

अमेरिका

सिंसिनाती	मेघा अग्रवाल	+1(516)312-4189
कनेक्टिकट	ऊष्मा जोशी	
फ्लोरिडा	बीना पटेल	+1(904)343-9056
शिकागो	चाँदनी ठक्कर	+12247700252
केलिफ़ोर्निया	सुशीला तयाल	+12247700252
न्यू जर्सी	शैली अग्रवाल	+912012842586

we are on net

narayanreikisatsangparivar @narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.
Call : 022-67847777

||नारायण नारायण||

'हक़' एक अरबी मूल का शब्द है, जिसका अर्थ होता है 'अधिकार', 'सत्य' या 'न्यायसंगत दावा'।

'हक़' एक ऐसा शब्द है, जो इंसान के जीवन में अधिकार, न्याय और सच्चाई का प्रतीक है।

जब हम हक़ की बात करते हैं, तो यह केवल अधिकार प्राप्त करने की मांग नहीं होती, बल्कि यह उन कर्तव्यों से भी जुड़ा होता है, जो समाज को संतुलित और न्यायसंगत बनाए रखते हैं। जब हम अपने कर्तव्यों को पूरा करते हैं तो हक़ स्वतः ही बड़ी सहजता से हमारे जीवन में आ जाते हैं ।

हक़ को विभिन्न श्रेणियों में बांटा जा सकता है। प्रत्येक हक़ की अपनी महत्ता है और यह समाज में संतुलन बनाए रखने में सहायक होता है।

१ प्राकृतिक हक़ (Natural Rights) वे हक़ हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति को जन्म से ही मिलते हैं। ये किसी सरकार या समाज द्वारा नहीं दिए जाते, बल्कि मानवता के आधार पर हर व्यक्ति के पास होते हैं।

जीवन का हक़ - हर इंसान को जीने का हक़ है और किसी को उसकी ज़िंदगी छीनने का अधिकार नहीं है।

स्वतंत्रता का हक़ - व्यक्ति को अपने विचार, धर्म, भाषा और जीवनशैली चुनने की आज़ादी होनी चाहिए।

संपत्ति का हक़ - व्यक्ति को अपनी मेहनत से अर्जित संपत्ति रखने और उसका उपयोग करने का अधिकार होना चाहिए।

२ . कानूनी हक़ (Legal Rights) किसी देश की सरकार या संविधान द्वारा तय किए जाते हैं। प्रत्येक देश में अलग-अलग कानूनी अधिकार होते हैं।संविधान द्वारा प्राप्त अधिकार - जैसे कि भारत में मौलिक अधिकार (Right to Equality, Right to Freedom, etc.)मतदान का हक़ - हर नागरिक को अपने देश की सरकार चुनने का अधिकार होना चाहिए।

कानूनी सहायता का हक़ - यदि किसी व्यक्ति के अधिकारों का हनन होता है, तो उसे न्याय पाने का हक़ मिलना चाहिए।

३. सामाजिक हक़ (Social Rights) ये अधिकार समाज में प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान और गरिमा के साथ जीवन जीने की अनुमति देते हैं।समानता का हक़ - जाति, धर्म, लिंग, रंग के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। शिक्षा का हक़ - सभी को समान और मुफ्त शिक्षा मिलनी चाहिए। स्वास्थ्य सेवाओं का हक़ - हर व्यक्ति को अच्छे स्वास्थ्य की सुविधाएँ मिलनी चाहिए।

४. धार्मिक हक़ (Religious Rights) कहते हैं कि व्यक्ति को अपनी आस्था और धार्मिक क्रियाओं को मानने और पालन करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। धर्म को चुनने और प्रचार करने का हक़। उपासना करने की

स्वतंत्रता। धार्मिक मान्यताओं और रीति-रिवाजों को मानने का हक़।

५. आर्थिक हक़ (Economic Rights) ये अधिकार व्यक्ति को आर्थिक रूप से स्वतंत्र और सुरक्षित रखने के लिए दिए जाते हैं। रोज़गार का हक़ - हर व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार काम करने का अधिकार होना चाहिए।

उचित वेतन का हक़ - श्रमिकों को उनके काम का उचित पारिश्रमिक मिलना चाहिए।

व्यापार करने का हक़ - प्रत्येक व्यक्ति को व्यापार करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

हक़ केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता और कानूनी अधिकारों तक सीमित नहीं होते, बल्कि समाज और परिवार के भीतर भी इसकी अहम भूमिका होती है। हर व्यक्ति समाज और परिवार का एक अभिन्न हिस्सा होता है, और उसके कुछ अधिकार और कर्तव्य होते हैं। सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर हक़ की सही समझ और उसका पालन ही एक स्वस्थ, संतुलित और न्यायसंगत समाज की नींव रखता है। समाज की प्राथमिक इकाई है परिवार। परिवार किसी भी समाज की सबसे छोटी लेकिन सबसे महत्वपूर्ण इकाई होती है। परिवार के भीतर हक़ की समझ और संतुलन से ही एक स्वस्थ समाज की नींव रखी जाती है।

हक़ केवल अधिकारों की बात नहीं करता, बल्कि यह कर्तव्यों से भी जुड़ा हुआ है। यदि व्यक्ति को अपने अधिकार चाहिए, तो उसे दूसरों के अधिकारों का सम्मान भी करना होगा।

उदाहरण के लिए,यदि किसी को बोलने की स्वतंत्रता का हक़ है, तो उसे दूसरों की भावनाओं का सम्मान भी करना होगा ।यदि किसी को संपत्ति रखने का हक़ है, तो उसे यह भी देखना होगा कि वह अवैध रूप से किसी की संपत्ति न छीने।

राज दीदी कहती हैं यदि आपको अपना हक़ चाहिए तो पहले अपने कर्तव्यों को अपनी ज़िम्मेदारियों को अच्छे से पूरा कीजिए। जो लोग आपके साथ रहतें हैं चाहे वो आपके परिवार के सदस्य हों चाहे दोस्त मित्र रिश्तेदार, उनको अपना सर्वोत्तम देना हर मनुष्य का पहला कर्तव्य है । आप देखेंगे जब आप अपने कर्तव्यों को पूरा करते हैं तो आपके हक़ का प्यार, सम्मान, दुलार सब स्वाभाविक रूप से मिल जाते हैं । दीदी कहती हैं यदि आपको अपने कर्तव्यों को पूरा करने के बाद आपका हक़ नहीं मिलता तो समझ जाएँ यह आपके प्रारब्ध हैं। कभी भी अपने हक़ को पाने के लिए महाभारत करके अपने रामायण जैसे जीवन को नष्ट न करें ।

जब भी आपके मन में मेरा हक़ मुझे नहीं मिल रहा है यह भाव जागे या यह भाव जागे कि मुझे मेरा हक़ चाहिए तो समझ चाहिए प्रकृति आपको स्व मूल्यांकन के लिए प्रेरित कर रही है। प्रकृति आपको यह चेता रही है कि आप अपने कर्तव्यों को पूरा करने में कहीं चूक कर रहे हैं । आपसे कर्तव्यों को पूरा करने में जो चूक हो रही है उस पर काम करें और फिर देखें आपका हक़ कैसे आपकी झोली में आ जाता है । दीदी कहती हैं याद रखें , आप

अपने हक़ों को जानें और साथ ही साथ दूसरों को भी जागरूक करना ज़रूरी है।

यदि कोई व्यक्ति अपने नैसर्गिक हक़ से वंचित हो, तो उसे न्याय प्रणाली का सहारा लेना पड़े तो अवश्य लें ।

अपने हक़ के सामाजिक आंदोलनों और मानवाधिकार संगठनों का समर्थन करना चाहिए ताकि नीतियों और कानूनों में सुधार करके लोगों के हक़ों की रक्षा की जा सके । लोगों को उनके हक़ों के बारे में शिक्षित करना भी आवश्यक है।

सरकार को प्रभावी कानून लागू करने चाहिए, ताकि लोगों के हक़ों की रक्षा हो सके।

सामाजिक और पारिवारिक हक़ केवल अधिकारों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये कर्तव्यों से भी जुड़े हुए हैं। जब समाज और परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को उसके हक़ मिलते हैं और वह अपने कर्तव्यों का पालन करता है, तो एक संतुलित, न्यायसंगत और खुशहाल समाज का निर्माण होता है। हक़ और कर्तव्यों में संतुलन बनाए रखना ही समाज की स्थिरता और प्रगति की कुंजी है।

हक़ केवल अधिकारों का नाम नहीं, बल्कि यह एक ज़िम्मेदारी भी है। जब समाज का हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करता है तो वह न्यायसंगत हक़ का हक़दार हो जाता है तभी एक आदर्श समाज का निर्माण होता है। हक़ और न्याय का संतुलन बनाए रखना ही समाज की स्थिरता और प्रगति की कुंजी है।

॥ नारायण नारायण ॥

आज का विचार

जब आप अपने जीवन में आने वाले हर व्यक्ति को शुभचिंतक मानेंगे और सद्भावना के साथ व्यवहार करेंगे तो सद्भावना में उन चीजों को भी आकर्षित करने की शक्ति है जो आप चाहते तो हैं पर वो आपके भाग्य में नहीं है । सद्भावना से जियें और सप्त सितार जीवन पायें ।

- राज दीदी

ज्ञान मँजूषा

ज्ञान मंजूषा के इस स्तंभ में हम राज दीदी द्वारा पूर्व में सत्संग के दौरान दिए गए ज्ञान कलश के कुछ मोती लाये हैं :-

निरंतर अपना कार्य करते रहें

राज दीदी ने एक सत्य प्रसंग पर आधारित राधिका के माध्यम से सत्र की शुरुआत की। राधिका विदेशी company में job करती थी। राधिका की company ने राधिका को Bangkok भेजा था। लिखती हैं राधिका कि अभी मैंने उस शहर को पूरी तरह से देखा भी नहीं था, न जाना था, न समझा था लेकिन मैं ये दावे के साथ कह सकती थी कि वहाँ के चमेली के फूलों के गजरे की गजब की खुशबू थी। राधिका कहतीं हैं कि दीवानी थी मैं वहाँ के चमेली के फूलों की खुशबू की। बात दरअसल ये थी कि मैं जिस Apartment में रहा करती थी, उस Apartment के बाहर सुबह सुबह ७:०० बजे एक फूल बेचने वाला, बड़ी सारी टोकरी लिए, तरह तरह के रंग बिरंगे फूल टोकरी में लाता था। वहीं पर बैठकर वह चमेली के फूलों का गजरा बनाया करता था। गजरे के दोनों किनारे छोटे छोटे पीले फूलों से सजा दिया करता। मॉर्निंग वॉक से लौटते वक्त मैं उससे चमेली के फूलों का गजरा खरीदती थी। मैं मेरे कमरे में चमेली के फूलों के गजरे को एयर कंडीशन के सामने रख दिया करती और मेरा पूरा कमरा चमेली की खुशबू से महक उठता। मेरी जिससे भी बातचीत होती - परिचित, रिश्तेदार, परिवार के सदस्य, मैं सबसे उन चमेली के फूलों की चर्चा किया करती, उसकी प्रशंसा करती। दीवानी थी मैं वहां के चमेली के फूलों की।

राधिका आगे लिखती हैं - एक दिन मैं ऑफिस में अपना काम कर रही थी, उतने में मेरे पास मेरे साथ काम करने वाली कर्मचारी एक file लेने के लिए आई। वह Bangkok की ही रहवासी थी। उसे file देने के लिए मैंने अपने टेबल का drawer खोला, मुझे उसी खुशबू का एहसास हुआ, जिस खुशबू की मैं दीवानी थी, यानी चमेली के फूलों की। मैंने स्थायी कर्मचारी को ऊपर से नीचे तक निहारा। न उसके बालों में और न ही उसके हाथों में गजरा था, जिसकी वजह से खुशबू आ रही थी। मैंने उससे पूछा कि चमेली के फूलों की खुशबू कहा से आ रही है? मेरे इतना कहने पर वह मुस्कुराते हुए बोली, ये चमेली के फूलों की खुशबू नहीं है और अपने bag की chain में हाथ डालकर मेरे सामने कुछ रख दिया। यह देखकर मैं दंग रह गई कि उसके हाथ में तो वही पीला फूल है जो चमेली के गजरे के दोनों किनारों पर वो गजरा बेचने वाला लगाया करता था। मैं आश्चर्य में पड़ गई थी, आज तक तो मैं उन चमेली के फूलों की खुशबू की प्रशंसा किया करती थी, जबकि यह खुशबू इन पीले फूलों की थी। इसके बावजूद भी पीले फूलों ने एतराज या शिकायत नहीं की, वह निरंतर खुशबू देता रहा।

राधिका कहतीं हैं कि मैं यह देखकर दंग रह गई और उसी क्षण मैंने निर्णय ले लिया कि मुझे भी इन पीले फूलों की तरह ही बनना है। अपना काम निरंतर करते जाना है, कोई अप्रीशीएट करे तो ठीक है, नहीं करे तो भी ठीक है, कोई क्रेडिट दे तो ठीक है, कोई क्रेडिट ना दे तो भी ठीक है। मैंने ये नियम अपनी पर्सनल लाइफ और

अपनी प्रोफेशनल लाइफ दोनों में लागू कर दिया। उसके बाद मैं जीवन में निरंतर प्रगति करती गई। पहले मेरी ये व्यवस्था थी कि मैं कोई भी कार्य करती, चाहे छोटा या बड़ा, यदि सामने से कोई मुझे प्रेरित नहीं करता या मुझे Appreciation नहीं मिलता तो मैं hurt हो जाती, upset हो जाती और अपने आप को काम करने से रोक देती। इसलिए मैं जीवन में कभी भी आगे नहीं बढ़ पाती थी, लेकिन जब मैंने इन पीले फूलों का नियम अपने जीवन में अपनाया तो मैं निरंतर प्रगति करती चली गई।

राज दीदी ने आगे कहा कि 'राधिका ने तो पीले फूलों का हुनर अपना लिया, आपका क्या इरादा है?'

मज़ाक में भी नकारात्मक शब्दों का प्रयोग न करें

नारायण शास्त्र कहता है कि नकारात्मक शब्दों की श्रेणी में सिर्फ़ यही सब नहीं आते या जिन्हें हम गाली कहते हैं वही शब्द नहीं आते हैं, आपके मुख से निकला हुआ हर एक शब्द जो दूसरों को दुःख पहुंचता है या आहत कर देता है वह सारे शब्द अपशब्द की श्रेणी में आते हैं। ऐसे में आप नेगेटिव एनर्जी ही आकर्षित करते हैं। Is It clear.

राज दीदी ने आगे कहा अब बात करते हैं उन व्यक्तियों की जिनको बात-बात में अपशब्द इस्तेमाल करने की आदत है, गालियां देने की आदत है। अब ये अपशब्द आपके मुख से सहज निकले हो, मज़ाक में निकले हों या क्रोध में निकले हों पर निकले तो हैं और ये सारे कौन से शब्द हैं ? नकारात्मक शब्द हैं। आपने थर्ड पर्सन को अपशब्द कहे तो उसकी नेगेटिव एनर्जी आपके near dear ones में प्रवेश करेगी क्योंकि वह शब्द आपके मुख से निकले थे। वह आपको रिप्लाई देने तो आएगी ही, आपके नियर डियर one's के भीतर प्रवेश करके Monster यानी राक्षस का रूप ले कर। उसका स्वभाव कैसा होता है, यह मुझे आप सभी को बताने की ज़रूरत नहीं है। ये नेगेटिव एनर्जी उसके भीतर गई और आपके प्रति उसका स्वभाव, उसका व्यवहार नेगेटिव हो जाएगा और आपका जीवन हो जाएगा Hell. ऐसे लोग होते हैं जो नेगेटिव शब्दों का इस्तेमाल करते हैं और वही लोग बोलते हैं कि उनके जीवन में कुछ ठीक नहीं चल रहा है। जब से वे NRSP से जुड़े हैं तब से उनके मुख से नेगेटिव शब्द नहीं निकल रहे हैं। जब आप NRSP से जुड़े नहीं थे और आप नेगेटिव शब्दों का इस्तेमाल करते थे तो आपका जीवन कैसा था? सामने से नेगेटिव शब्द ही आपको मिलते होंगे।

पितृ दोष क्या है

पितृ दोष हमें कब पता चलता है? जब हम जन्म कुंडली दिखाते हैं। है ना। मुझे तो ये समझ में आ रहा है। जब जा के दिखाओगे तो ही पता चलता है कि कुंडली में पितृ दोष है। जब हमारा अच्छा समय चल रहा होता है, तो

जन्म कुंडली जाकर दिखाते हैं क्या? यह पूछते हैं क्या, कि कब तक चलेगा ऐसा? जब समय ठीक नहीं चल रहा होता है तब जाकर आप जन्म कुंडली दिखाते हैं। बरोबर..? आपने कुंडली दिखाई तब आपको पता चला कि पितृ दोष है। फिर भाव मन में आया कि दोष होगा तो भुगतान भी भुगतना पड़ेगा। अब मुझे ये बताओ कि पित्तर जी किसे कहते हैं ? जहां तक मुझे समझता है वो ये है कि हमारे घर में जो बड़े बूढ़े थे, दादा परदादा उन सभी को हम पितृ देवता में काउंट करते हैं। बराबर...? जीते जी उन्होंने आपको कोई परेशानी दी क्या तो मरने के बाद क्यों देंगे? अब इसको ये समझ लो ये पितृ दोष नहीं है, ये स्पैलिंग मिस्टेक है। नारायण शास्त्र बोलता है देखो, आपके पित्तर जी दुःखी हैं और रोष में हैं , रोष यानि उन्हें क्रोध आया हुआ है, वे क्रोधित हैं। दुःखी क्यों हैं? पहले वो समझते हैं। आप जन्म कुंडली दिखाने क्यों जाते हैं? जब दुःखी होते हैं । आपको दुःखी देखकर उन्हें दुःख हो रहा है। इसलिए वो दुःखी हैं। इतना समझा... मान्य है क्या...? कि आपको दुःखी देखकर वह दुःखी हैं। उनको आपके ऊपर क्रोध क्यों आता है? यह अवस्था कब आती है? जब आप ऐसा कुछ करते हैं जो बुरा है, गलत है, अनुचित है। तो उन्हें इस बात पर क्रोध आ रहा है कि यह गलत कार्य क्यों कर रहा हैं? अब हम लोगों ने क्या किया? हम लोगों ने 'द' दुःख से ले लिया और रोष से 'ष' ले लिया। सब न समझ म आय गो के...?

राज दीदी ने आगे कहा कि कुंडली में पितृ दोष है, यह जब आपको पता चलता है तो आपको आत्म चिंतन करना चाहिए है कि हम क्या गलत कर रहे हैं ? कई लोग हमारे पास ऐसे भी आते हैं जो यह बोलते हैं कि हम ने तो जाकर कुंडली दिखाई पितृ दोष पाया, पूजा पाठ करा दी, इसके बाद भी यह दोष हटा नहीं है। अरे जब तक गलतियां करते रहोगे तब तक यह नहीं हटेगा। समझ म आयो के...? आपको समझा क्या...? तो जो गलत है, अनुचित है वह कार्य करना बंद कर दीजिए, यह दोष हट जाएगा। आप next time जन्म कुंडली दिखाने को जाओगे तो पितृ देवता प्रसन्न हैं, ऐसा कहा जाएगा।

जल्द से जल्द मुझे खुशियां हासिल हो और साथ ही मेरे काम आसानी से होते रहें उसके उपाय

यह बात उन दिनों की है जब न्यूज़ पेपर का बोलबाला था, जैसे आज मोबाइल का बोलबाला है। न्यूज़ पेपर की यह खासियत थी कि लोगों के दिन की शुरुआत न्यूज़पेपर से होती थी और घर में चाहे चार मेंबर हो या पंद्रह मेंबर हों घर में एक ही न्यूज पेपर आता था और पूरा घर पढ़ लेता था और कई बार तो पड़ोसी भी मांग कर ले जाते थे। एक लैंड लाइन फोन होता था, पूरे घर वाले उसका यूज करते थे। जो मेरे समय के लोग हैं उन्हें यह ज़रूर पता होगा कि लैंडलाइन की घंटी बहुत ज़ोर से बजती थी और घर में सबको सुनती थी। जो जहां पर होता वहां से चिल्लाता अरे फोन की घंटी बजी है उठाओ। जो आनंद उस एक न्यूज़ पेपर का था, उस एक लैंड लाइन फोन का था वह आनंद आज की युवा पीढ़ी समझ नहीं पाएगी।

राधिका आगे लिखती है कि उन दिनों लोगों के दिन की शुरुआत चाहे न्यूज़ पेपर से होती मगर मेरे दिन के शुरुआत न्यूज पेपर से नहीं होती थी। मैं इंतज़ार नहीं करती थी कि न्यूज़ पेपर आएगा और मैं पढ़ूंगी फिर काम

करना शुरू करूँगी। कभी कबार एक नज़र ज़रूर डाल देती थी न्यूज़ पेपर पर ये जानने के लिए कि दुनिया में हो क्या रहा है। लेकिन पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लगता है कि मुझे पढ़ने की ज़रूरत ही नहीं थी क्योंकि न्यूज पेपर पूरा भरा पड़ा होता था नकारात्मक समाचारों से और नकारात्मक समाचार तो वैसे भी जंगल में आग की तरह फैल ही जाते हैं।

राधिका आगे लिखती है कि सामने डाइनिंग टेबल पर न्यूज़ पेपर रखा हुआ था, मैंने सहज ही पढ़ना शुरू कर दिया, उस दिन की हेडलाइन थी कि एक प्राइवेट एयरलाइंस को ज़बरदस्त नुकसान पहुचा है और पूरा फ्रंट पेज उस न्यूज़ से भरा पड़ा था। क्यों हुआ, कैसे हुआ, क्या क्या गलतियां हुई सारा विस्तार से दिया गया था। सभी भाषाओं के Newspapers में उस एयरलाइन्स के बारे में ही बढ़ा चढ़ा कर लिखा गया था। सारे newspapers के अंदर के पन्नों में उन लोगों की कहानी लिखी हुई थी जो एक समय सफलता की ऊंचाई पर पहुंचे हुए थे लेकिन पहुंचने के बाद धड़ाम से नीचे गिर गए थे। इस तरह की नकारात्मक खबरें हमारे सबकॉन्शियस माइंड तक यह संदेश पहुंचाती है कि यदि सफल होना है तो सोच समझ कर होइए, अंत में धड़ाम से नीचे गिर जाओगे।

आगे लिखती है राधिका कि पूरा न्यूज़ पेपर पढ़ने के बाद मेरा दिमाग नेगेटिविटी से भर गया। मैं खबरों के बारे में चिंतन कर ही रही थी और उतने में मेरा बेटा आया और कहने लगा कि मम्मा ९:०० बजे तक मेरा लंच पैक कर देना। मुझे आश्चर्य हुआ कि रविवार के दिन भी उसे कहीं जाना है..! पूछने पर उसने बताया कि उसके कॉलेज ने विद्यार्थियों का ग्रुप बनाया है और उन्हें प्रोजेक्ट दिया गया है इसलिए उसे जाना होगा। उन लोगों को slum areas में जाना था और वहां के अस्वस्थ लोगों का इलाज कैसे करवाया जाए वह देखना था और बेरोज़गारों को रोज़गार दिलवाने के लिए काम करना था। बाकी उस जगह की साफ़ सफाई भी करनी थी और वहां के लोगों से भी करवानी थी। लोगों को साफ़ सफाई का महत्व समझाना था।

आगे लिखती है राधिका कि जैसे ही मैंने यह बात सुनी वैसे ही मेरे भीतर की सारी नेगेटिविटी बाहर निकल गई, यह प्रबल भाव के साथ कि दुनिया में अच्छी चीज भी तो हो रही है। उसे दिन मैंने ढेर सारी अच्छी खबरें आकर्षित की।

दूसरी खबर मुझ तक यह पहुंची कि हमारे परिचित का बेटा केशव जो कि महज २३ वर्ष का है वह हर रविवार के दिन अपने दोस्तों के साथ जो street children होते हैं, उनको जमा करके उनके नाखुन और बाल काटना, उन्हें नहलाना, पढ़ाना और खिलाना यह सारे कार्य करते हैं और ये सब कुछ वो अपने pocket money से करते हैं। यदा कदा कुछ सहयोग मिल जाता है। साथ ही साथ उनकी team में ऐसा है कि यदि आज आप आए हैं, तो अगली बार आपको एक जन को और लेकर आना है, ताकि group बढ़ता चला जाए, सेवा बढ़ती चली जाए।

आगे लिखती है राधिका कि नेगेटिव खबरों की बजाय ऐसी पॉज़िटिव खबरें न्यूज़ पेपर्स की headlines क्यों नहीं बन सकती है? अब मैं जब भी न्यूज़ पेपर पढ़ती हूं तब उसमें यह ढूंढती हूं कि कहां कुछ अच्छी खबरें छपी हो, जैसे कि कोई वॉचमैन का बेटा डॉक्टर बन गया, धोबी का बेटा sports में मेडल लाया। अब मेरी पड़ोसन जब भी मुझसे कहती है कि फलाना पेपर में यह हैडलाइन है कि वहां इतने लोग मारे गए तब मैं उसे कहती हूं कि पेपर में यह भी तो न्यूज़ छपी है कि वॉचमैन का बेटा डॉक्टर बन गया। भोजन करते वक्त हम डाइनिंग टेबल पर सारी सकारात्मक बातें डिस्कस करते हैं, उपलब्धियों को सेलिब्रेट करते हैं।

आगे लिखती है राधिका कि मैं अपनों की उपलब्धियों को तो सेलिब्रेट करती ही हूं और अनजानों की उपलब्धियां को भी सेलिब्रेट करती हूं। मुझे कहीं से कोई भी सकारात्मक खबर मिलती है जैसे कि किसी ने अपनी ज़िन्दगी में कुछ हासिल किया हो, उस व्यक्ति को मैं जानती भी नहीं हूं तो भी मैं उसे सेलिब्रेट करती हूं।

राज दीदी ने आगे कहा कि हमने उनसे पूछा कि आप कैसे सेलिब्रेट करते हो? उसने कहा घर में कुछ मीठा बनाती हूं, भगवान के सामने भोग धरती हूं, धन्यवाद करती हूं कि उसके घर में खुशियां आई और प्रसाद सर्वत्र बांटती हूं।

आगे लिखती है राधिका कि अब जब मैं ऐसा कर रही थी तो मैं यह देख रही हूं कि मेरा जीवन पहले से कितना बेहतर होता चला जा रहा है, आसान होता जा रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि मेरे काम बहुत आसानी से होते चले जा रहे हैं। जब मुझे इस बात का एहसास हुआ तो मैंने यह ठान लिया कि जो मैं कर रही हूं उसे मुझे आगे भी करना है। लिखती है राधिका कि मैंने तो ठान लिया आपका क्या इरादा है? अच्छी बातों की ही चर्चा करनी है, अच्छी बातों को ही सेलिब्रेट करना है।

राज दीदी ने आगे कहा, जब हम स्कूल में थे तो कुछ प्रश्नों के उत्तर हमें विस्तार में लिखने होते थे और कुछ पांच प्रश्न ऐसे भी होते थे कि उनके उत्तर एक लाइन में लिखने होते थे। विस्तार में तो हमने आपको इसका उत्तर दे दिया। आपके प्रश्न का एक लाइन में उत्तर यह है कि जल्दी-जल्दी खुशियां जीवन में आएं, काम आसान होते चले जाएँ । आप चाहते हो कि आपका जीवन खुशियों से भर जाए तो सीधा सरल काम आपको यह करना है कि दूसरों को खुशियां बांटना शुरू कर दीजिए। सामने वाले को खुशी मिले, सुख मिले ऐसा करना शुरू कर दीजिए, तो खुशियां आपका घर ढूंढते हुए खुद ही आ जाएगी, आपको अपने लिए efforts नहीं डालना पड़ेगा। दूसरा आप चाहते हैं कि आपके काम आसान और सरल होते चले जाएँ तो दूसरों के काम आसान करने में मदद करें, आपके काम अपने आप ही आसान और सरल होते चले जाएंगे। आपका काम कब रुकता है जब दूसरों के कामों में आप पंगा करते हैं। Is it clear..

युवा मंच

सच्ची सभ्यता वह है जहाँ हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को वह अधिकार देता है जिसका वह स्वयं दावा करता है।

भारत के संविधान ने नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य निर्धारित किए हैं। हमें बोलने का अधिकार है, वोट का अधिकार है, अभिव्यक्ति का अधिकार है, किसी भी धर्म का पालन करने का अधिकार है लेकिन एनआरएसपी में अधिकारों का अर्थ थोड़ा अलग है।

एनआरएसपी में विस्तार से बताया गया है कि हमें वह लेना चाहिए जो हमारा हक़ है। जब हम वह लेते हैं जिसके हम हक़दार हैं, तो हम सार्थक जीवन जी पाते हैं। अगर आप लालच में आकर वह पाने की कोशिश करते हैं जो आपका नहीं है तो प्रकृति उसे वापस ले लेती है और दंड के रूप में आपको विभिन्न माध्यमों से कई गुना भुगतान करना पड़ता है।

समाज में लोगों को उनके अधिकार दिलाने में मदद करने के लिए अदालतें हैं लेकिन प्रकृति और महाचेतना नामक एक बड़ी अदालत है जो लगातार हमारे कार्यों की निगरानी करती है। ब्रह्मांड में छिपे हुए कैमरे और माइक्रोफोन हैं जो लगातार हमारी हर हरकत को रिकॉर्ड कर रहे हैं।

कई बार हम उन परिस्थितियों के बारे में सोचते हैं जिनमें हम फंस जाते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि वह परिस्थिति आपके जीवन में क्यों आई। आत्मनिरीक्षण करें, उस पर मनन करें और आपको उत्तर मिल जाएगा।

एक माँ अपने बेटे के व्यवहार और उसके साथ ऑफिस में हो रही उथल-पुथल के बारे में राज दीदी के पास बात करने पहुँची। राज दीदी ने उसे प्रार्थना करने और ऑफिस के लोगों को अपने शुभचिंतकों के रूप में देखने के लिए कहा। एक सप्ताह के बाद महिला वापस आई और कहा कि स्थिति में कोई बदलाव नहीं हुआ है। राज दीदी ने उसे अपने बेटे को लाने के लिए कहा ताकि वह स्थिति के बारे में गहराई से जान सकें।

एक सामान्य बातचीत से शुरुआत करते हुए, राज दीदी ने उसकी दिनचर्या के बारे में पूछा।

उसने कबूल किया कि आमतौर पर वह सुबह देर से उठता है, अपना बिस्तर ऐसे ही छोड़ देता है, कई बार तो बिना नाश्ता किए ही कार्यालय चला जाता है जो उसकी माँ प्यार से बनाती है। कई बार, वह कार्यालय पहुँचने में देर कर देता है और फिर ज़ाहिर है कि दिन की शुरुआत एक अशांत नोट पर होती है। बॉस उसे बहुत सारा काम सौंपता है जिसके कारण उसे कार्यालय में देर तक रुकना पड़ता है।

उसकी कहानी सुनने के बाद दीदी ने उसे एक सप्ताह तक उनकी सलाह का पालन करने और परिणाम के साथ वापस आने के लिए कहा। राज दीदी ने उसे जल्दी उठने, समय पर बिस्तर पर जाने, नाश्ते का आनंद लेने और स्वादिष्ट नाश्ते के लिए अपनी माँ को धन्यवाद देने के लिए कहा। यह सुनकर, उसने पूछा कि यह दिनचर्या उसके कार्यालय की परिस्थितियों को कैसे प्रभावित कर सकती है। इस पर दीदी ने उसे बताया कि चूंकि अब तुम

वह सब काम नहीं कर रहे हो जो तुम्हारा हक़ व दायित्व है, इसलिए प्रकृति तुम पर कार्यालय में अतिरिक्त काम का बोझ डाल रही है। परीक्षण के आधार पर, उसने अपना शेड्यूल बदल दिया और आश्चर्यजनक रूप से तीसरे दिन राज दीदी के पास आभार से भरा फोन आया। उसने स्वीकार किया कि कार्यालय में उसके कार्यभार में बहुत अंतर है। उपरोक्त वर्णन स्पष्ट रूप से केवल वही लेने के महत्व के बारे में बताता है जो तुम्हारा हक़ है। अपना अधिकार लो, अपना अधिकार का खाओ, जो तुम्हारे लिए सही है उसे करके जीवन को खुशहाल बनाओ। (जो तुम्हारा हक़ है उसे लो और खाओ, जो तुम्हें सौंपा गया है उसे करके जीवन को खुशहाल बनाओ) संक्षेप में- सही सही है, भले ही कोई इसे न करे। गलत गलत है, भले ही हर कोई इसके बारे में गलत हो।

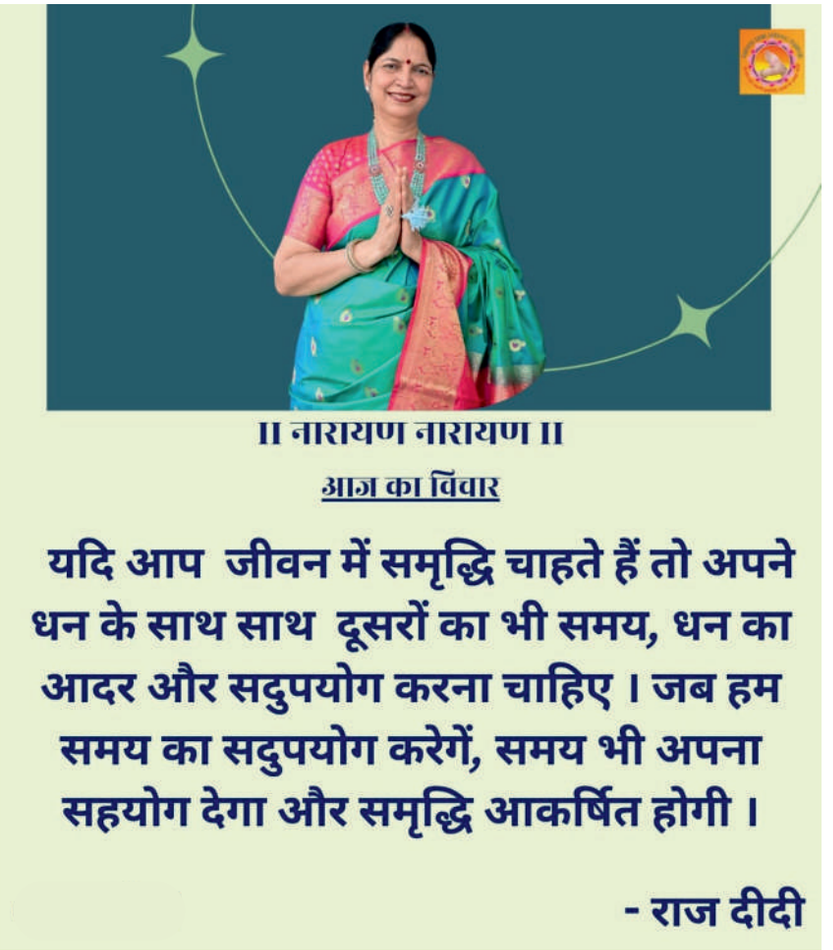

बच्चों की फुलवारी

सतयुग टीम ने तय किया कि सतयुग का यह अंक अधिकारों की व्याख्या करने के लिए समर्पित है।

अधिकारों का अर्थ क्या है?

अधिकार स्वतंत्रता या अधिकार के मूलभूत सिद्धांत हैं जिन्हें व्यक्तियों या समूहों के लिए आवश्यक माना जाता है।

अधिकारों को एक सुरक्षा कवच के रूप में समझें जो व्यक्तियों को नुकसान से बचाता है, उनकी गरिमा सुनिश्चित करता है और उनकी भलाई को बढ़ावा देता है।

कुछ प्राकृतिक अधिकार हैं जैसे जीवन, स्वतंत्रता और व्यक्ति की सुरक्षा का अधिकार।

फिर, कानूनी अधिकार हैं जिनमें समाज के कानूनों और रीति-रिवाजों द्वारा दिए गए अधिकार शामिल हैं, जैसे कि वोट देने का अधिकार या निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार। फिर, हमारे पास ऐसे अधिकार हैं जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वायत्तता की रक्षा करते हैं, जैसे कि बोलने की स्वतंत्रता का अधिकार या इकट्ठा होने का अधिकार।

एनआरएसपी के पास अधिकारों के लिए एक अलग परिभाषा है।

एनआरएसपी सिद्धांत कहते हैं कि हम सात सितारा जीवन के हकदार हैं लेकिन यह हमें तभी मिलेगा जब हम विचारों, शब्दों और कर्मों में हर समय सकारात्मक रहेंगे। एनआरएसपी का कहना है कि अगर कोई चीज आपके हक की है, लेकिन आपको उसे पाने के लिए नकारात्मक दृष्टिकोण का इस्तेमाल करना पड़ता है, तो इससे आपके जीवन में सकारात्मकता नहीं आएगी। वास्तव में, अगर आप उस पल उसे छोड़ देते हैं, तो ब्रह्मांड आपको सबसे अच्छी चीजों से मुआवजा देगा। महाभारत अधिकारों का स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहाँ दो भाई अपने हक की चीज के लिए लड़े। अंतिम परिणाम यह हुआ कि कौरवों का वंश पूरी तरह से नष्ट हो गया, और पांडव भी खुश नहीं थे। जबकि रामायण में भगवान राम ने अपने हक की चीज छोड़ दी, और आज भी वे राज करते हैं। एक चमकते सितारे ने एक बार साझा किया कि अंतिम परीक्षा के बाद जब उत्तर पुस्तिकाएँ दी गईं, तो बच्चे ने देखा कि उसे अतिरिक्त २ अंक दिए गए थे, जिससे वह कक्षा का टॉपर बन गया। एक चमकता सितारा होने के नाते, वह जानता था कि ईमानदारी एक ऐसा गुण है जो उसके अंदर गहराई से होना चाहिए। इसलिए वह शिक्षक के पास गया और उसकी गलती बताई। शिक्षक और स्कूल के प्रिंसिपल इतने खुश हुए कि उन्होंने उसे ग्रेस मार्क्स दिए और टॉपर के रूप में उसका स्थान सुनिश्चित किया। जो आपका हक है, उसे ईमानदारी और रुचि के साथ लें, और सभी की खुशी और संतुष्टि को ध्यान में रखें। फिर खुशी जीवन भर आपकी रहेगी।

दीदी के छाँव तले

सतयुग के इस अंक में हम सत्संगियों के उन अनुभवों को साझा करते हैं जो उन्होंने सत्संग को सुनने के बाद अपने भीतर महसूस किए । इस बार का अंक हक़ के ऊपर है तो हम हक़ से संबंधित कुछ अनुभवों को लेकर आपके सामने हाज़िर हैं:-

बिना हक़ का लेने के परिणाम

हमारे घर आये दिन कुछ न कुछ गैजेट्स खराब होते रहते हैं। बहुत आत्म चिंतन किया तब याद आया - एक परिचित के माध्यम से आ मी कैंटीन से तीन वर्षों तक सामान खरीदा। तब लगता था कि समृद्धि नहीं है तो कम कीमत का सामान खरीद कर बहुत समझदारी भरा काम किया है। परन्तु समृद्धि ज़्यादा की बजाय कम, और कम होती चली गयी।

जो मकान हमने एक करोड़ रूपए में बेचा , तुरंत उसकी कीमत तीन करोड़ हो गयी। दस साल से परिणाम भुगत रहे हैं। मैं सभी से प्रकृति से क्षमा मांगती हूँ। इतना अवेयर करने के लिए धन्यवाद।

दूसरे के हक़ का लिया

हम जॉइंट परिवार में थे , मैं अपना अलग खाना उसी किचन में बनती थी। छुपा छुपा कर किचन की हर एक चीज़ काम में लेती थी दूसरों का सामान लेती थी। देवरानी के बच्चों के हक़ का चुरा कर मेरे बच्चों को खिलाती थी खुद भी खाती थी। पति को कुछ पता नहीं था। परिणाम - २० साल से दवाइयों पर जीवन व्यतीत हो रहा है। पांच ऑपरेशन हो चुके हैं , हर महीने पांच हज़ार से ज़्यादा का दवाइयों का खर्चा होता है। नींद की दवाइयां लेनी पड़ती हैं। दीदी नारायण भवन में माफ़ी दिलवा दीजिये।

बिना हक़ का रखा

हमारे होटल में कोई कस्टमर अपना हैडफ़ोन भूल गया। पति ने फ़ोन किया तो उन्होंने कहा कि हम तो ट्रैन में बैठ गए हैं, आप वापर लीजिये। मेरे पति वो हैडफ़ोन घर ले आये और काम में लेने लगे। मैंने पति को कहा भी कि अपने पास तो है , आप ऑफिस में किसी को दे दीजिये। परन्तु पति नहीं माने। कुछ ही दिनों में हमारा १५०० रूपए का हैडफ़ोन खो गया। मैंने पति को कहा कि १०० रूपए का बिना हक़ का हैडफ़ोन रखा और परिणाम हमारा हेड फ़ोन खो गया। उन्होंने नारायण भवन में क्षमा मांगी और कहा है आगे से कभी किसी और के हक़ का नहीं रखेंगे।

बिना हक़ का लिया

ऑफिस के स्टोर से कॉफ़ी लेते थे , जो उनके हक़ का नहीं था। पति का स्टूडेंट कार्ड काम में लेती थी , जो कि मेरा नहीं था। जब से मैंने कॉफी लेना बंद किया और पति का स्टूडेंट कार्ड भी काम में लेना बंद कर दिया।

परिणाम - पति से बहुत नारायण सम्बन्ध था - जब से बिना हक़ का लेना बंद किया , मेरे पति से आपसी सम्बन्ध लव , रेस्पेक्ट से भर गए हैं।

बिना हक़ का लिया

हमने भी कैंटीन से बिना हक़ का सामान लिया , समृद्धि रुकी हुई है।

दुकान से कपड़ा लेते समय दुकानदार पूरा थान दे देता था, तब हम चोरी से अतिरिक्त कपड़ा रख लिया करते थे, यह सोच कर कि दुकानदार को पता नहीं चलेगा। हमारी समृद्धि नारायण हेल्प है। हमें क्षमा दिलवाएं दीदी।

ईमानदारी से हटे, अब परिणाम

कुछ ही दिन हुए सतसंग से जुड़े हुए, मुझे हमारी अपनी एक एक गलती याद आ रही है। टैक्स भरते समय बहुत घपला करके भरते थे, ऑफिस के खर्चे पर पर्सनल काम करते थे, बढ़ा चढ़ा कर खर्चे बताते थे। परिणाम - हमने जिनको भी इंटरेस्ट पर पैसे दिए, अभी तक वापस नहीं आये, बची हुई प्रॉपर्टी बेच कर कर्जा उतारना पड़ेगा। पर मन को शान्ति है कि पता चला कि हम क्या गलत कर रहे थे और कहाँ सुधार करने की ज़रूरत है। आपको कोटि कोटि धन्यवाद है दीदी।

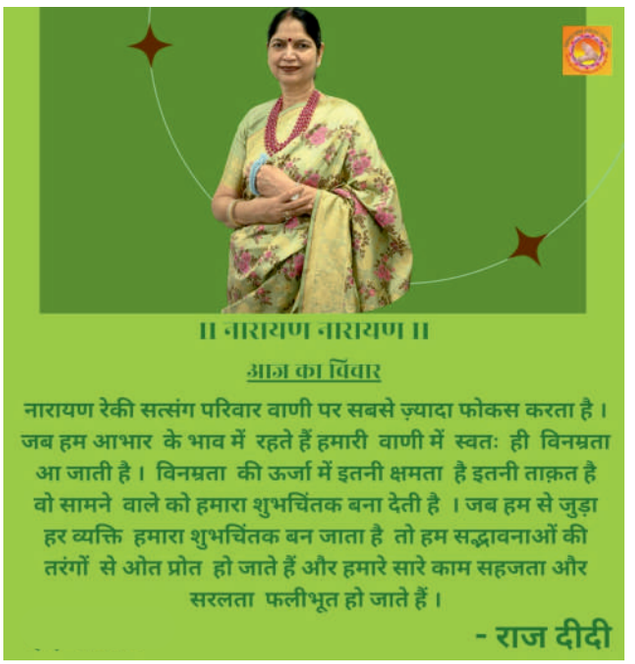

प्रेरणादायक वृत्तांत

हक़ का भोजन

राजा विक्रमादित्य के दरबार में एक पहुंचे हुए संत आए।

राजा संतों का बहुत सम्मान करते थे तो उन्होंने संत से पूछा कि बताइए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?

संत बोले कि मैं भूखा हूं, मुझे भोजन दें, लेकिन एक बात ध्यान रखें, खाना आपके हक़ का होना चाहिए।

खाना तो ठीक है, लेकिन हक़ की बात सुनकर राजा विक्रमादित्य हैरान हो गए। उन्होंने पूछा कि ये हक़ का खाना किसे कहते हैं? मैंने ये बात पहली बार सुनी है।

संत ने जवाब दिया कि में आपको आपके राज्य के एक बूढ़े का पता बताता हूं, आप उसके पास जाइए और उससे ये बात पूछिए।

राजा तुरंत ही संत के बताए हुए बूढ़े व्यक्ति के पास पहुंच गए। वह एक जुलाहा था। उस जुलाहे से राजा ने पूछा कि कृपया बताइए कि ये हक़ का भोजन क्या होता है?

उस बूढ़े जुलाहे ने जवाब दिया कि आज मेरी इस थाली में जो खाना है, उसमें आधा मेरे हक़ का है और आधा दूसरों के हक़ का है।

राजा ने बूढ़े से कहा कि कृपया ये बात मुझे विस्तार से समझाइए।

बूढ़े व्यक्ति बताया कि कल रात मैं जब सूत कात रहा था तो अंधेरे में मैंने दीपक जलाया और काम करने लगा। उसी समय मेरे घर के पास से कुछ लोग गुज़र रहे थे, उन सभी के पास मशालें थीं।

उनकी मशालों को देखकर मैंने अपना दीपक बुझा दिया और उनकी मशालों की रोशनी में काम कर लिया। उस काम से जो धन मैंने कमाया है, उस धन से ये खाना आया है।

अब इस खाने में आधा हक़ मेरा है, क्योंकि मैंने काम किया है और आधा उन मशाल लिए लोगों का है, जिनकी रोशनी में मैंने काम किया था।

बूढ़े व्यक्ति की बातें सुनकर राजा विक्रमादित्य को संत की बात समझ आ गई कि वह राजा की मेहनत से कमाए हुए धन का खाना मांग रहे हैं। तब राजा ने संत को अपनी मेहनत से कमाए हुए धन से खाना खिलाया।

सीख : इस कहानी की सीख यह है कि हमें किसी भी स्थिति में दूसरों का हक़ नहीं मारना चाहिए। अगर हम दूसरों की मदद लेते हैं या दूसरों के संसाधनों का उपयोग करते हैं तो उन्हें इसका श्रेय और लाभ में हिस्सा ज़रूर देना चाहिए।

॥ 卐 ॥

मेरा हक़

बहुत समय पहले की बात है। एक सेठ था जो बहुत बड़ा व्यापारी था। उसके यहाँ बहुत सारे मज़दूर काम करते थे। उनमें से एक मज़दूर बहुत ही ईमानदार और मेहनती था। वह सालों से सेठ के यहाँ काम कर रहा था, लेकिन कभी किसी चीज़ की लालच नहीं की।

एक दिन सेठ ने सोचा, 'यह मज़दूर कितना ईमानदार है, क्यों न इसकी परीक्षा ली जाए।'

सेठ ने एक दिन उसे बुलाया और कहा, 'मैं बाहर जा रहा हूँ। यह मेरी तिजोरी की चाबी है, इसमें बहुत सारा सोना है। एक हफ़्ते तक इसकी देखभाल तुम्हारे ज़िम्मे है।'

मज़दूर ने चाबी ली और तिजोरी की अच्छे से रखवाली की। हफ़्ते भर बाद जब सेठ लौटा, तो उसने देखा कि तिजोरी वैसी की वैसी है - एक भी सोने का सिक्का नहीं छुआ गया।

सेठ ने खुश होकर मज़दूर से कहा, 'अगर तुम चाहते तो हज़ारों सिक्के चुरा सकते थे, पर तुमने ऐसा नहीं किया। क्यों?'

मज़दूर ने सिर झुकाकर जवाब दिया, 'सेठ जी, ये मेरा हक़ नहीं था। मैं वो ही लेता हूँ जो मेरा हक़ है - मेहनत की मज़दूरी। जो चीज़ मेरी नहीं है, वो मुझे कभी सुख नहीं दे सकती।'

सेठ की आँखों में आँसू आ गए। उसने उसी वक़्त मज़दूर को व्यापार में अपना साझेदार बना लिया।

सीखः हमें हमेशा वही लेना चाहिए जो हमारा हक़ है। दूसरों की चीज़ों पर नज़र डालने से सम्मान नहीं मिलता, बल्कि सच्चा सम्मान और भरोसा तभी मिलता है जब हम ईमानदारी से अपना हक़ पहचानें और उसी से संतुष्ट रहें।

जो हमारा नहीं है, उसे लेने का हक़ हमें नहीं है।

रंजीता मालपानी को जन्मदिन पर (१२ मार्च) सुख शांति सेहत समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य का आशीर्वाद ।

अयोध्या देवी मालपानी को जन्मदिन पर (२५ मार्च) सुख शांति सेहत समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य का आशीर्वाद ।

उचित न्याय

एक बार राजा हर्षवर्धन अपने दरबार में न्याय कर रहे थे। तभी एक बूढ़ा ब्राह्मण आया और बोलाः

'महाराज, मेरे पड़ोसी ने मेरी ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया है।'

राजा ने तुरंत उस व्यक्ति को बुलवाया। उस व्यक्ति ने कहाः 'महाराज, ब्राह्मण ने कभी उस ज़मीन पर खेती नहीं की, मैंने की है, तो अब वो मेरी होनी चाहिए।'

राजा ने मुस्कुराकर कहाः 'अगर किसी चीज़ को इस्तेमाल करने से वो तुम्हारी हो जाती, तो फिर तुम जिस हवा में सांस लेते हो, वो तो सबकी होनी चाहिए। लेकिन ये प्रकृति का हक़ है। और ज़मीन का हक़ उसी का होता है, जिसका हक़दार कानूनन है।'

राजा ने ज़मीन ब्राह्मण को वापस दिलाई और समझायाः 'जो हमारा नहीं है, उसे लेने का हक़ हमें नहीं है।'

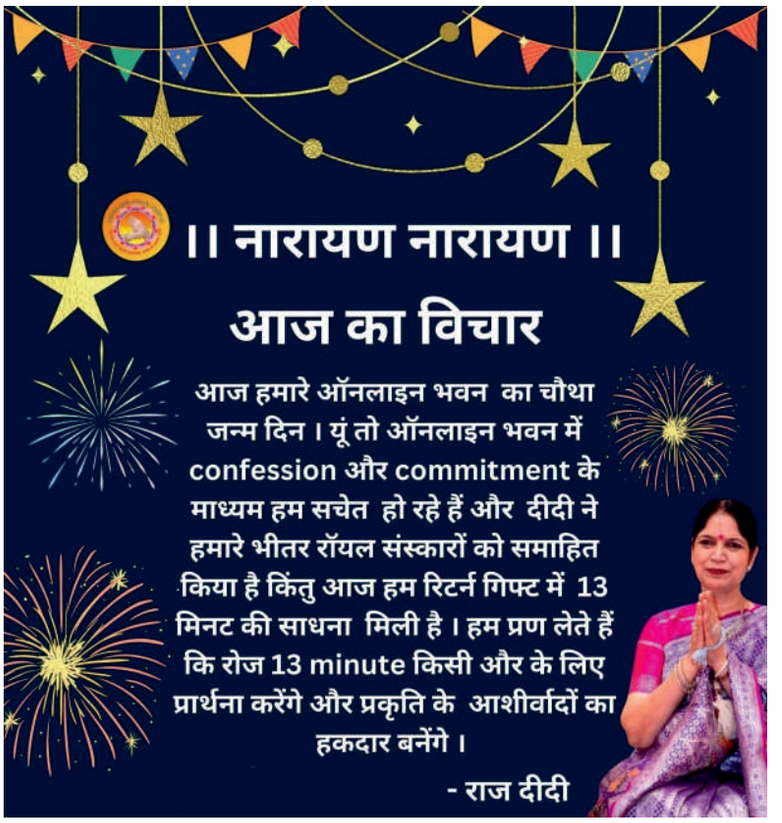

॥ 卐 ॥

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,

ll Narayan Narayan ll

When Team Satyug told about the topic of this edition as 'Rights ', I suddenly remembered this story I had read.

A saint was preaching in a village. He said, "Having Food which is not your right, is also poison."

A man said, "Maharaj, if I am dying of hunger, is it a crime to eat someone's bread?"

The saint smiled and said, "If you did not work hard, and ate taking advantage of someone's helplessness or mercy, then yes, it will become a disease in your body. But if you asked for help and took it honestly, then that is rightful- as a human being."

We also have to remember that right is not only of property or money, but also of respect and humanity. Whatever you take, take it with honesty and truth. It is not right to take someone's safety pin without right. It is said in our religion, "Pardhan Haran Paapam". It means taking someone else's wealth (or right) is a sin. Right is a thing or feeling that when it is yours, it gives peace to the heart and comfort to the soul, but if it is taken from someone else's right, it becomes a burden. In the sadhana of Brahma Muhurta, we heard that whoever took even a particle without any right, paid a ton in their lifetime, whether it was body, mind, money or relations. Whenever someone takes from someone else's right, he is filled with dissatisfaction and guilt from within, no matter how successful he may look from outside. On the other hand, a person who is honestly satisfied with only his right is calm and satisfied from within. Always take what is your right. If you are unable to understand whether a particular thing is your right or not, then take the help of Narayan Coin and take what comes in your right. By walking on the right path one becomes entitled to a seven star life.

All good, -

R. Modi

CO-EDITOR
Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM
Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office
Narayan Bhawan
Topiwala Compound, station road,
Goregaon (West), Mumbai.

Editorial Office
Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

AHMEDABAD	JAIWINI SHAH	9712945552
AKOLA	SHOBHA AGRAWAL	9423102461
AKOLA	RIYA AGARWAL	9075322783
AMRAVATI	TARULATA AGRAWAL	9422855590
AURANGABAD	MADHURI DHANUKA	7040666999
BANGALORE	KANISHKA PODDAR	7045724921
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9341402211
BASTI	POONAM GADIA	9839582411
BIHAR	POONAM DUDHANI	9431160611
BHILWADA	REKHA CHOUDHARY	8947036241
BHOPAL	RENU GATTANI	9826377979
CHENNAI	NIRMALA CHOUDHARY	9380111170
DELHI (NOIDA)	TARUN CHANDAK	9560338327
DELHI(NOIDA)	MEGHA GUPTA	9968696600
DELHI (W)	RENU VIJ	9899277422
DHULIA	RENU BHATWAL	878571680
GONDIYA	POOJA AGRAWAL	9326811588
GAUHATI	SARLA LAHOTI	9435042637
HYDERABAD	SNEHALATA KEDIA	9247819681
INDORE	DHANSHREE SHIRALKAR	9324799502
JALANA	RAJNI AGRAWAL	8888882666
JALGAON	KALA AGARWAL	9325038277
JAIPUR	PREETI SHARMA	9461046537
JAIPUR	SUNITA SHARMA	8949357310
JHUNJHNU	PUSHPA DEVI TIBEREWAL	9694966254
ICHAKARANJI	JAY PRAKASH GOENKA	9422043578
KOLHAPUR	RADHIKA KUMTHEKAR	9518980632
KOLKATTA	SWETA KEDIA	9831543533
KANPUR	NEELAM AGARWAL	9956359597
LATUR	JYOTI BHUTADA	9657656991
MALEGAON	REKHA GARODIA	9595659042
MALEGAON	AARTI CHOUDHARY	9673519641
MORBI	KALPANA CHOUARDIA	8469927279
NAGPUR	SUDHA AGRAWAL	9373101818
NANDED	CHANDA KABRA	9422415436
NAWALGARH	MAMTA SINGRODIA	9460844144
NASIK	SUNITA AGARWAL	9892344435
PUNE	ABHA CHOUDHARY	9373161261
PATNA	ARBIND KUMAR	9422126725
PURULIYA	MRIDU RATHI	9434012619
PARATWADA	RAKHI MANISH AGRAWAL	9763263911
RAIPUR	ADITI AGRAWAL	7898588999
RANCHI	ANAND CHOUDHARY	9431115477
SURAT	RANJANA AGARWAL	9328199171
Sangli	Hema Mantri	9403571677
SIKAR (RAJASTHAN)	SUSHMA AGARWAL	9320066700
SHRI GANGANAGAR	MADHU TRIVEDI	9468881560
SATARA	NEELAM KDAM	9923557133
SHOLAPUR	SUVARNA BALDEVA	9561414443
SILIGURI	AKANKSHA MUNDHRA	9564025556
TATA NAGAR	UMA ARAWAL	9642556770
ROURKELA	UMA ARAWAL	9776890000
UDAIPUR	GUNWATI GOYAL	9223563020
HUBLI	PALLAVI MALANI	9901382572
VARANASI	ANITA BHALOTIA	9918388543
VIJAYWADA	KIRAN JHAWAR	9703933740
VARDHA	RUPA SINGHANIA	9833538222
VISHAKAPATTNAM	MANJU GUPTA	9848936660

INTERNATIONAL CENTRE NAME AND NUMBER

AUSTRALIA	RANJANA MODI	61470045681
DUBAI	VIMLA PODDAR	+971528371106
KATHMANDU	RICHA KEDIA	+977985-1132261
SINGAPORE	POOJA GUPTA	+6591454445
SHRJAH-UAE	SHILPA MANJARE	+971501752655
BANGKOK	GAYATRI AGARWAL	+66952479920
VIRATNAGAR	MANJU AGARWAL	+977980-2792005
VIRATNAGAR	VANDANA GOYAL	+977984-2377821

Editorial

Dear readers,

ll Narayan Narayan ll

A few days ago, a friend called me and invited me to her house. She asked my opinion on a particular topic. I fixed a time and reached her house. She looked a little confused. As soon as she saw me, she hugged me. I held her hand and made her sit on the sofa and asked, 'Tell me, why are you so confused? Why do you need my opinion?' She said, 'You are associated with Narayan Reiki Satsang. I know that Raj Didi advises various important ways to improve life in her satsang. There is a discussion of partition in my house. You know that I have always lived here in Mumbai with my family. Neither mom and dad ever took anything from us nor did we ever give anything to them. So, do we have any right in their property now? Tell me, what does Raj Didi say?'

I told her the same thing that Didi says. Fulfil your duties in the best possible way. Never talk about partition and if partition is happening then take whatever you are getting as a blessing. Do not create Mahabharata by saying it is my right.

After listening to me, she hugged me because her confusion was cleared.

Team Satyug took a resolution to talk to its readers about rights in this issue and this issue is now in your hands.

You should always take what is your right. With these best wishes.

Yours own,
Sandhya Gupta

To get
important message and information from NRSP Please Register yourself on 08369501979 Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

“Haq” is a word of Arabic origin, which means “right”, “truth” or “just claim”.

“Haq” is a word that symbolizes rights, justice and truth in human life.

When we talk about rights, it is not just a demand to get rights, but it is also related to those duties which keep the society balanced and just. When we fulfil our duties, rights automatically come into our life very easily.

Rights can be divided into different categories. Each right has its own importance and it helps in maintaining balance in the society.

1.**Natural right** are those rights which every person gets from birth. These are not given by any government or society, but every person has them on the basis of humanity.

Right to life - Every human being has the right to live, and no one has the right to take away his life.

Right to freedom – A person should have the freedom to choose his thoughts, religion, language and lifestyle.

Right to property – A person should have the right to keep and use the property earned by his hard work.

2. **Legal rights** are decided by the government or constitution of a country. Every country has different legal rights. Rights granted by the constitution – such as fundamental rights in India (Right to Equality, Right to Freedom, etc.)
Right to vote – Every citizen should have the right to choose the government of his country.

Right to legal aid – If a person’s rights are violated, he should get the right to get justice.

3. **Social Rights**: These rights allow every person in the society to live life with respect and dignity.

Right to equality – There should be no discrimination on the basis of caste, religion, gender, colour.

Right to education – Everyone should get equal and free education.

Right to health services – Every person should get good health facilities.

4. **Religious rights**: It is said that a person should have the freedom to believe and follow his faith and religious activities. Right to choose and propagate religion. Freedom to worship. Right to follow religious beliefs and customs.

5**. Economic rights**: These rights are given to keep a person economically independent and secure.

Right to employment – Every person should have the right to work according to his ability.

Right to fair wages – Workers should get fair remuneration for their work.

Right to do business – Every person should get the freedom to do business.

Rights are not limited to personal freedom and legal rights, but they also play an important role within society and family. Every person is an integral part of society and family, and has certain rights and duties. The correct understanding of rights at the social and family level and its observance lays the foundation of a healthy, balanced and equitable society. The primary unit of society is the family. Family is the smallest but most important unit of any society. The foundation of a healthy society is laid by the understanding and balance of rights within the family.

Rights do not only talk about rights, but they are also linked to duties. If a person wants his rights, then he will also have to respect the rights of others.

For example**, if someone has the right to freedom of speech, then he will also have to respect the feelings of others**. If someone has the right to own property, then he will also have to see that he does not snatch anyone's property illegally.

Raj Didi says that if you want your rights, then first fulfil your duties and responsibilities properly. It is the first duty of every human being to give his

best to the people who live with you, whether they are your family members or friends or relatives. You will see that when you fulfil your duties, you get your rightful love, respect, affection, all naturally. Didi says that if you do not get your right after fulfilling your duties, then understand that this is your destiny. Never destroy your life which is like Ramayana, by doing Mahabharata to get your rights.

Whenever you feel that I am not getting my rights or I want my rights, then you need understanding. Nature is motivating you to self-evaluate. Nature is warning you that you are making mistakes in fulfilling your duties. Work on the mistakes you are making in fulfilling your duties and then see how your rights come into your lap. Didi says remember, it is important to know your rights and at the same time make others aware.

If a person is deprived of his natural rights, then he must take the help of the justice system.

You should support social movements and human rights organizations for your rights so that people's rights can be protected by improving policies and laws. It is also necessary to educate people about their rights.

The government should implement effective laws so that people's rights can be protected.

Social and family rights are not limited to rights only, but they are also linked to duties. When every person in the society and family gets his rights and fulfils his duties, then a balanced, just and happy society is formed. **Maintaining a balance between rights and duties is the key to the stability and progress of the society.**

Rights are not just the name of rights, but it is also a responsibility. When every person in the society fulfils his duties, then he becomes entitled to just rights, only then an ideal society is formed. Maintaining a balance between rights and justice is the key to the stability and progress of the society.

Wisdom Box
(Glimpses of Satsang)

In this column of Wisdom, we have presented before you some pearls from the pot of of knowledge given by Raj Didi during the earlier satsangs: -

Keep doing your work continuously

Raj Didi started the session by sharing of Radhika, based on a true incident.

Radhika used to work in a foreign company. Radhika's company had sent her to Bangkok. Radhika writes that I had not seen that city completely, neither knew nor understood it, but I could say with confidence that the jasmine flower garlands there had a wonderful fragrance. Radhika says that, I was crazy about the fragrance of jasmine flowers there. Actually, outside the apartment in which I used to live, at 7:00 in the morning, a flower seller used to bring a large basket full of different kinds of colourful flowers. He used to sit there and make a garland of jasmine flowers. He used to decorate both sides of the garland with small yellow flowers. While returning from morning walk, I used to buy a garland of jasmine flowers from him. I used to keep a garland of jasmine flowers in front of the air conditioner in my room and my whole room would be filled with the fragrance of jasmine. Whoever I talked to – acquaintances, relatives, family members, I used to talk about those jasmine flowers and praise them.

Radhika further writes – One day I was doing my work in the office, when my colleague came to me to take a file. She was a resident of Bangkok. I opened the drawer of my table to give her the file, I smelt the same fragrance, the fragrance of which I was crazy, i.e. jasmine flowers. I looked at the permanent employee from top to bottom. Neither in her hair nor in her hands was there a garland, due to which the fragrance was coming. I asked her where is the fragrance of jasmine flowers coming from..?? On my saying this, she smiled and said, this is not the fragrance of jasmine flowers and put her hand in the chain of her bag and placed something in front of me. I was stunned to see that in her hand was the same yellow flower which the garland seller used to put on both sides of the jasmine garland. I was surprised, till today I used to praise the fragrance of those jasmine flowers, whereas this fragrance was of these yellow flowers. Despite this, the yellow flowers did not object or complain, they continued to give fragrance.

Radhika says that I was stunned to see this and at that very moment I decided that I too have to become like these yellow flowers. I have to keep doing my work, if someone appreciates me, it is okay, if they don't, it is okay, if someone gives me credit, it is okay, if someone does not give me credit, it is okay. I applied this rule in

both my personal life and my professional life. After that, I continued to progress in life. Earlier, my system was that whatever work I did, whether small or big, if no one inspired me or I did not get appreciation, I would get hurt, upset and stop myself from working. That is why I was never able to move forward in life, but when I adopted the rule of these yellow flowers in my life, I began making progress.

Raj Didi further adds, “Radhika has acquired the skill of yellow flowers, what is your intention..??”

Do not use negative words even in jest

Narayan Shastra says that only abuses are not the only words that come under the category of negative words, every word that comes out of your mouth that hurts or offends others comes under the category of abuses. In such a case, you attract only negative energy. Is It clear..??

Raj Didi further said, now let us talk about those people who have the habit of using abusive words in every conversation, have the habit of abusing. Now these abusive words may have come out of your mouth naturally, jokingly or in anger, but they have come out and what are all these words..?? They are negative words. If you abuse a third person, then his negative energy will enter your near dear ones because those words came out of your mouth. He will definitely come to reply to you, by entering inside your near dear one’s and taking the form of a monster. I do not need to tell you all what his nature is like. This negative energy went inside him and his nature, his behaviour towards you will become negative and your life will become hell. There are people who use negative words and they say that nothing is going right in their life. Since they have joined NRSP, no negative words are coming out of their mouth. How was your life when you were not associated with NRSP and you used negative words..?? You must have been getting only negative words from the other side.

What is Pitra Dosh

When do we come to know about Pitra Dosh..?? When we show our birth chart. Isn’t it? I understand this. Only when you go and show it, you come to know that there is Pitra Dosh in the horoscope. When we are going through good times, do we go and show our birth chart..?? Do we ask, how long will this continue..?? When times are not going well, then you go and show your birth chart. Right..?? When you showed your horoscope, then you came to know that there is Pitra Dosh. Then the thought came in your mind that if there is a dosh, then you will have to bear the consequences. Now tell me who is called Pitra Ji..?? As far as I understand, it is that

the elders in our house, grandfathers, great grandfathers, we count all of them in Pitra Devta. If they didn't trouble you in life, why would they after death? Now understand this that this is not Pitra Dosh, it is a spelling mistake, it is Pitrurosh. Rosh meaning anger . Narayan Shastra says, look, your ancestors are sad and angry, anger means they are angry, they are furious. Why are they sad..?? First you understand this . Why do you go to show your horoscope..?? When you are sad. They feel sad seeing you sad. That is why they are sad. Did you understand this much..?? Is it acceptable..?? That they are sad seeing you sad. Why do they get angry at you..?? When does this situation come..?? When you do something which is bad, wrong, improper. Then get angry if you are you doing this wrong thing..?? Now what did we do..?? We took "D" from duk (sad) and "osh" from anger. And it became pitru dosh You did not understand everything..??

Ways to make yourself happy as soon as possible and also to make my work easy

This is about those days when newspapers were very popular, just like mobile phones are popular today. Newspapers had this specialty that people's day would start with newspapers and whether there were four or fifteen members in the house, only one newspaper would come to the house and the whole family would read it and sometimes even the neighbours would borrow it. There used to be one landline phone, and the whole family would use it. People of my time would definitely know that the landline bell would ring very loudly and everyone in the house would hear it. Wherever anyone would be, would shout from there, hey, the phone is ringing, pick it up. The joy that I had from that one newspaper, that one landline phone, that joy will not be understood by today's young generation.

Radhika further writes that in those days people's day might have started with newspapers but my day did not start with newspapers. I did not wait for the newspaper to come so that I could read it and then start working. I would glance at the newspaper once in a while to know what was happening in the world. But after reading it, I felt that need not have to read it because the newspaper was full of negative news and negative news spreads like wildfire anyway.

Radhika further writes that a newspaper was kept on the dining table in front of me, I started reading it spontaneously, the headline of that day was that a private airline has suffered a huge loss and the entire front page was filled with that news. Why it happened, how it happened, what mistakes were made, everything was given in detail. Newspapers of all languages had written in exaggeration about that airline.

The inside pages of all the newspapers had written the stories of those people who had once reached the heights of success but after reaching there, they fell down with a thud. Such negative news sends this message to our subconscious mind that if you want to be successful, then do it thoughtfully, in the end you will fall down with a thud.

Radhika further writes that after reading the entire newspaper, my mind was filled with negativity. I was thinking about the news and in the meantime my son came and started saying that mummy pack my lunch by 9:00 o'clock. I was surprised that he had to go somewhere on a Sunday! On asking, he told me that his college had formed a group of students and they had been given a project, so he had to go. They had to go to slum areas and see how to treat the sick people there and work to provide employment to the unemployed. Apart from this, they had to clean that place and also get the people there to do the same. They had to explain the importance of cleanliness to the people.

Radhika further writes that as soon as I heard this, all the negativity inside me went out, with a strong feeling that good things are also happening in the world. That day I attracted a lot of good news.

The second news that reached me was that our acquaintance's son Keshav, who is just 23 years old, every Sunday, along with his friends, gathered street children and cut their nails and hair, bathes them, teaches them and feeds them, and he does all this with his pocket money. Sometimes they get some support. Also, in their team, it is such that if you have come today, then next time you have to bring one more person, so that the group keeps growing and the service keeps increasing.

Radhika further writes that why can't such positive news become headlines of newspapers instead of negative news..?? Now whenever I read the newspaper, I look for some good news printed in it, like a watchman's son became a doctor, washerman's son won a medal in sports. Now whenever my neighbour tells me that there is a headline in such and such paper that so many people were killed there, then I tell her that this news is also printed in the paper that the watchman's son became a doctor. While eating, we discuss all the positive things on the dining table, celebrate achievements.

Radhika further writes that I not only celebrate the achievements of my loved ones but also celebrate the achievements of strangers. If I get any positive news from

anywhere, like someone has achieved something in his life, I don't even know that person, still I celebrate him.

Raj Didi further said that we asked her how do you celebrate...?? She said she makes some sweets at home, offers them to God, thanks him for bringing happiness to her home and distributes prasad everywhere.

Radhika further writes that now when I am doing this, I am seeing how much better my life is becoming, it is becoming easier than before. The biggest thing is that my work is getting done very easily. When I realized this, I decided that whatever I am doing, I have to continue doing it in future also. Radhika writes that I have decided what is your intention..?? We have to discuss only good things, we have to celebrate only good things.

Raj Didi further said, when we were in school, we had to write the answers of some questions in detail and there were some five questions whose answers had to be written in one line. We have answered it in detail. The answer to your question in one line is that we should be happy in life and our work should become easier. If you want your life to be filled with happiness, then the simple thing you have to do is to start sharing happiness with others. Start doing things that make the other person happy and content, then happiness will comelooking for you, and you won't have to put in any efforts for yourself. Secondly, if you want your work to become easier and simpler, then help others in making their work easier, your work will become easier and simpler on its own. When does your work stop? When you create problems in the work of others. Is it clear...

Youth Desk

What are rights?

A true civilization is where every man gives to every other every right he claims for himself.

The constitution of India has laid down the Rights and Duties of citizens.

We have right to speech , Right to Vote, Right to expression, Right to follow any religion but in NRSP the meaning of rights is little different.

NRSP elaborates that we should take which rightfully belongs to us.

When we take for which we are entitled, then we are sure to lead a meaningful life. In case you get tempted and try to acquire what is not yours then the nature takes it back and as a penalty you have pay in multiples through various mediums.

There are courts in the society to help people get their rights but there is a bigger court called nature and super consciousness which continuously monitors our actions. There are hidden cameras and microphones in the universe which are continuously recording our every action.

Numerous times we wonder about the situations we get into. Have you ever reflected why that situation came into your life. Introspect, meditate on it and you will find the answer.

A mother approached Raj Didi regarding her son's behaviour and the turmoil her son was going through in his office. Raj Didi asked her to do prayers and visualize the office people as his well-wishers. After a week the lady came back and said that there is no change in the situation. Raj didi asked her to bring her son so that she can get a deeper insight into the situation.

Beginning with a casual talk, Raj didi enquired about his daily routine.

He confessed that usually he gets up late in the morning, leaves his bed undone, at times also goes to office without having breakfast which his mother prepares lovingly.

At times, he is late to reach office and then obviously the day begins on a disturbed note.

The boss allocates him with lot of work due to which he has to stay back late at office.

On listening to his story didi asked him to follow her recommendations for a week and revert back with the outcome. Raj didi asked him to get up early, do his bed, enjoy the breakfast and thank his mother for the tasty breakfast.

On listening this, he enquired how can this routine affect his office circumstances. Didi replied that as you are not doing the work which is rightfully yours so the nature is burdening you with extra work at office.

On a trial basis, he changed his schedule and amazingly on the third day Raj didi got a call from him paying Gratitude. He accepted that there is an immense difference in his workload at office.

Above narration clearly tells about the importance of taking only what is rightfully yours.

अपने हक़ का लेना, अपने हक़ का खाना,
अपने हक़ का काम करके, जीवन सुखी बनाना।

(Take and eat what is rightfully yours, make life happy by doing work rightfully which is assigned to you)

To summarize-

Right is right, even if nobody does it. Wrong is wrong, even if everybody is wrong about it."

॥ 卐 ॥

Children's Desk

The Satyug team decided that this issue of Satyug is dedicated to explaining rights.

What is the meaning of rights?

Rights are fundamental principles of freedom or entitlement that are considered essential for individuals or groups.

Think of rights as a safeguard that protects individuals from harm, ensures their dignity, and promotes their well-being.

There are some natural rights like the right to life, liberty, and security of person.

Then, there are legal rights that include rights that are granted by a society's laws and customs, such as the right to vote or the right to a fair trial. Then, we have rights that protect individual freedom and autonomy, such as the right to free speech or the right to assemble.

NRSP has a different definition for rights.

NRSP principles state we are rightfully entitled for a seven-star life but that we will only get it when we are at all times positive in thoughts ,words, and deeds. NRSP says if anything belongs to you rightfully, yet if you have to use a negative approach to get it, then that will not bring positivity in your life. In fact, if at that moment you let go, then Universe will compensate you with the best of things. TheMahabharata depicts the clear example of rights, where two brothers fought over what was rightfully theirs. The end result was that the clan of Kauravas was completely destroyed, and the Pandavas, too, were not happy.

Whereas in the Ramayana Lord Ram gave up what was rightfully his, and even today he reigns .

A sparkling star once shared that after the final exams during the results when the answer papers were given, the child noticed that he was given extra 2 marks, which made him the topper of the class. Being a sparkling star, he knew honesty was one quality that needed to be profound in him. So he walked up to the teacher and pointed out her mistake. The teacher and the principal of the school were so happy that they granted him grace marks and ensured his position as a topper.

Take what rightfully belongs to you with honesty and interest keeping in mind the happiness and contentment of all associated. Then Happiness will be yours for a lifetime.

Under The Guidance of Rajdidi

In this issue of Satyug, we share the experiences of the satsangis and the difference which they felt after listening to the Satsang. This time the issue is on rights, which are rightfully yours. So we present in this column some experiences related to rights: -

The consequences of taking what is not rightful

Every day some gadget or the other keeps getting damaged in our house. After a lot of self-introspection, I remembered - I bought goods from the army canteen for three years through an acquaintance. At that time, I felt that there was no prosperity, so I did a very wise thing by buying goods at a low price. But instead of increasing prosperity, it kept decreasing and decreasing.

The house which we sold for one crore rupees, its price immediately became three crores. We have been suffering the consequences for ten years. I apologize to everyone and nature. Thank you for making me so aware.

I took what is the rightof others

We were in a joint family, I used to cook my food separatelythough in the same kitchen. I used to use everything of the kitchen secretly, I used to take other people's things. I used to steal the share of my sister-in-law's children and feed my children and myself too. My husband had no idea. Result - I am living on medicines for the last 20 years. I had undergone five operations, every month I spend more than five thousand rupees on medicines. I have to take sleeping pills. Didi, please get me pardon in Narayan Bhawan.

Kept without right

A customer forgot his headphones in our hotel. When my husband called, he said that he has boarded the train, he can use them. My husband brought those headphones home and started using them. I even told my husband to give them to someone in the office. But my husband did not agree. Within a few days our headphones worth Rs. 1500 were lost. I told my husband that he kept headphones worth Rs. 100 without right and as a result our headphones were lost. He apologized in Narayan Bhawan and said that he will never keep someone else's right in future.

Kept without right

I used to take coffee from the office store of my husband, which was not my right. I used to use my husband's student card, which was not mine. After understanding that I should not take anything which is not rightfully yours, I stopped taking coffee from my husband's office and stopped using my husband's student card. Result - I had a very good relationship with my husband. Since the time I stopped taking what is due to me without my rights, my relationship with my husband has become full of love and respect.

Took without right

We also took goods without right from the canteen, prosperity has stopped.While taking clothes from the shop, the shopkeeper used to give the whole piece, then we used to keep extra cloth by stealing, thinking that the shopkeeper will not come to know. Our prosperity is Narayan's help. Get us forgiven Didi.

Was not honest, now paying the price

It has been only a few days since I joined Satsang, I am remembering each and every mistake of mine. While paying tax, we used to do a lot of fraud, used to do personal work on office expenses, used to show exaggerated expenses. Result - Whoever we gave money to on interest, has not been returned till now, the loan will have to be repaid by selling the remaining property. But the mind is at peace that we got to know what we were doing wrong and where we need to improve. Thank you a lot Didi.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Ranjita Malpani on her birthday (12th March) for a seven-star life with success and happiness in all spheres.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Ayodhyadevi Malpani on her birthday (25th March) for a seven star life abundant with success and happiness in all spheres.

Right Food

An eminent saint came to the court of King Vikramaditya.

The king respected saints a lot, so he asked the saint, tell me how can I help you?

The saint said that I am hungry, give me food, but keep one thing in mind, the food should be rightfully yours.

Food is fine, but King Vikramaditya was surprised to hear about food rightfully yours. He asked what isthe meaning of -food should be **Rightfully your**s. I have heard of this for the first time.

The saint replied that I will tell you the address of an old man in your kingdom, you go to him and ask him this question.

The king immediately went to the house of the old man told by the saint. He was a weaver. The king asked the weaver, please tell me what is the food which is rightfully yours?

The old weaver replied that today the food in my plate, half of the food is rightfullymine and the other half belongs to others.

The king asked the old man to please explain this to him in detail.

The old man explained that last night when I was spinning yarn, I lit a lamp in the dark and started working. At the same time some people were passing by my house, all of them had torches.

Seeing their torches, I extinguished my lamp and worked in the light of their torches. The money I have earned from that work, this food has come from that money.

Now half of this food is mine because I have worked for it but the other half of it belongs to those people with torches, in whose light I worked.

After listening to the old man, King Vikramaditya understood the saint's point of view that he was asking for food from the money earned by the king's hard work. Then the king fed the saint with the money earned by his hard work.

The lesson of this story is that we should not usurp the rights of others in any situation. If we take help from others or use others' resources, then we must give them credit for it and share in the profit.

My Right

It was a long time ago. There was a rich man who was a very big businessman. He had many workers working for him. One of them was very honest and hardworking. He had been working for the rich man for years, but never coveted anything.

One day the rich man thought, "This worker is so honest, why not test him."

The rich man called him one day and said,

"I am going out. This is the key to my safe, it has a lot of gold in it. You are responsible for taking care of it for a week."

The worker took the key and guarded the safe properly. When the rich man returned after a week, he saw that the safe was exactly as it was – not even a single gold coin had been touched.

The rich man happily said to the worker,

"If you wanted, you could have stolen thousands of coins, but you did not do that. Why?"

The labourer bowed his head and replied,

"Seth ji, this was not my right. I only take what is my right, that is the wages of my hard work. The thing which is not mine can never give me happiness."

Tears came in Seth's eyes. He immediately made the labourer his partner in the business.

Lesson:

We should always take what is our right. Respect is not gained by looking at the things of others, but true respect and trust is gained only when we honestly recognize our right and are satisfied with that.

We do not have the right to take what is not ours.

Rightful Justice

Once King Harshvardhan was giving justice in his court. Just then an old Brahmin came and said:

“Maharaj, my neighbour has occupied my land.”

The king immediately called that person. That person said:

“Maharaj, the Brahmin never cultivated that land, I have, so now it should be mine.”

The king smiled and said:

“If using something makes it yours, then the air you breathe should belong to everyone. But this is nature’s right. Only the one who is legally entitled to land has a right to it.”

The king returned the land to the brahmin and explained:

“We don’t have a right to take what doesn’t belong to us.”

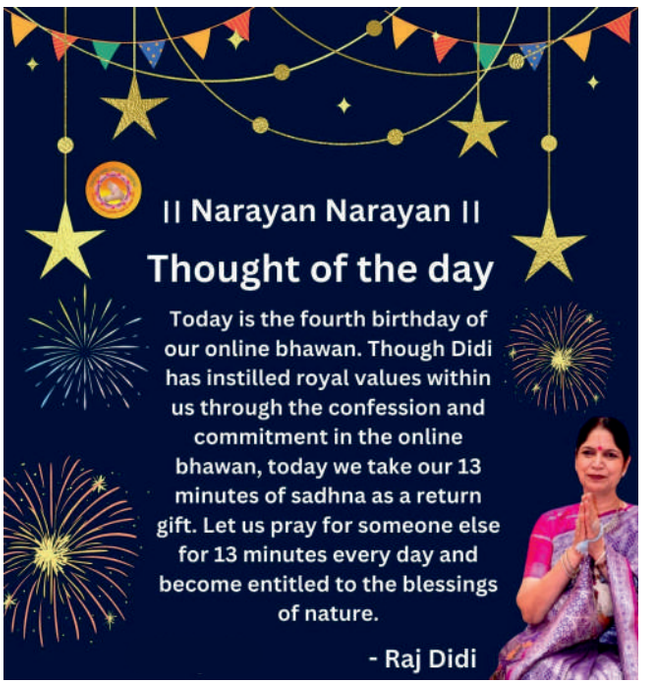

GOLDEN SIX

1) Prayer -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

2) Energize Vaults - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

3) Shanti Kalash Meditation – Visualize a Shanti Kalash (Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

4) Value Addition - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

5) Energize Dining Table/ Office table - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

6) Sun Rays Meditation - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com